

॥ श्री रामजी ॥

प्रवचन

रामस्नेही संत श्री रामप्रसाद जी महाराज
श्री बदायुनदास गुरुदास, जोधपुर

साधन में दृढ़ता

भगवान् की प्राप्ति के लिए अनेकों साधन हैं, जो जैसा अधिकारी होता है, उसे वैसा ही साधन बताया जाता है। कई लोगों से भूल हो जाती है कि वे एक साधन को अपनाकर, उस साधन की तरफ ध्यान नहीं देकर दूसरे साधन को अपनाने की चेष्टा करते हैं। ऐसा कभी नहीं करना चाहिए। साधक को अपने साधन पर दृढ़ रहना चाहिए। यदि कोई दूसरा साधन बताया जाता है, तो वह उसी के लिए होता है। जो उस साधन का अधिकारी हो। लेकिन लोग भ्रमित हो जाते हैं की कौन सा साधन ठीक है, किस साधन को अपनाया जाए? लोगों को इस प्रकार की भ्रांति नहीं होनी चाहिए।

एक साधक ने प्रश्न किया कि "जब मैं मेरे ईष्ट राम जी का ध्यान करता हूँ तो मुझे शंकरजी दिखते हैं"

महाराज ने कहा कि यदि राम जी आपके ईष्ट हैं और आपको शंकरजी दिखाई दे तो यही समझना चाहिए की मेरे राम जी ही, शंकरजी के रूप में दर्शन दे रहे हैं। इसलिए अपने ईष्ट के प्रति दृढ़ रहना चाहिए।

साधनावस्था में साधक को अपने साधन के प्रति दृढ़ रहना चाहिए। दूसरे साधन कभी नहीं फकड़ने चाहिए। लोग अपना साधन भूल जाते हैं और दूसरे के साधन अपनाते हैं, परन्तु जब व्यक्ति अपने

साधन पर दृढ़ नहीं रहता है तो वह दूसरे साधन पर कितने दिन दृढ़ रह सकता है । अतः साधक को अपने साधन के प्रति ही दृढ़ रहना चाहिए ।

किसी बात को सुनकर हमारे मन में हसचल नहीं होनी चाहिए । इसे कहते हैं निष्ठा । निष्ठा दृढ़ होनी चाहिए, एक सिद्धांत के ऊपर मजबूत रहना चाहिए । उस साधन को अपनाना चाहिए, जो साधन हमें रुचिकर लगे और जिन साधन से हमारा कल्याण हो ।

साधन कभी भी किसी पर थोपा नहीं जाता और कभी भी ऐसा नहीं कहा जाता कि साधन विशेष करेंगे तभी उद्धार होगा । सभी की अलग-अलग रुचि होती है । उदाहरण स्वरूप घर में देखो तो प्रत्येक सदस्य की भिन्न-भिन्न रुचि होती है । कोई मीठा अधिक पसंद करता है, तो कोई नमकीन, कोई कम मिर्ची पसंद करता है, तो कोई ज्यादा मिर्च, प्रायः इस बात पर विवाद भी हो जाता है । माँ को प्रत्येक के लिए अलग प्रकार की सब्जी बनानी पड़ती है । ठीक उसी प्रकार साधक की भी अलग-अलग रुचि होती है और जो साधन स्वयं को श्रेष्ठ एवं रुचिकर लगे उसे अपनाकर साधक को दृढ़ रहना चाहिए । साधन में कमी नहीं रहनी चाहिए । साधन में अश्रद्धा नहीं होनी चाहिए, लेकिन साधन के प्रति अश्रद्धा हो जाती है कि जो साधन अपनाया है । उससे कल्याण होगा, की नहीं यह भावना मन में भी न हो आनी चाहिए, भगवान की श्रुति अवश्य होगी । मन में दृढ़ विश्वास कर लो कि जो मार्ग पकड़ लिया, निष्ठा पकड़ ली तो पकड़ ली साधन का त्याग नहीं

करेंगे। शरीर चला जाए तो परवाह नहीं आपत्ति आ जाए परवाह नहीं, संसार के लोग आपत्ति करे परवाह नहीं, विपत्ति आ जाए तो भी परवाह नहीं लेकिन मैं अपने साधन का त्याग नहीं करूँगा, ऐसी दृढ़ता रख कर साधन करे तो साधक शीघ्र ही अपने साध्य की प्राप्ति कर सकता है। साध्य की प्राप्ति सुगम है, लेकिन जो साधक साधन को लेकर विचलित हो जाता है तो साध्य की प्राप्ति कैसे होगी? अतः मन में बिना किसी प्रकार की हलचल के, साधन पर दृढ़ रहना चाहिए।

संत कहते हैं कि सब की बात सुनो, परन्तु जो बात स्वयं के लिए अनुकूल हो उसे ही स्वीकार करो। जब हम दुकान पर जाते तो हम केवल जरूरत की चीज खरीदते हैं, सारी चीजें तो नहीं खरीदते। एक व्यक्ति शक्कर खरीदने के लिए गया और दुकानदार से कहा। कितने शक्कर चाहिए। दुकानदार ने शक्कर तोल दी। उस व्यक्ति ने दुकानदार से पूछा कि क्या आप गुड़ भी रखते हैं? दुकानदार ने उत्तर दिया हाँ, तो वह व्यक्ति बोला कि मैं शक्कर नहीं ले जाऊँगा, मुझे शक्कर की जरूरत है, आप गुड़ क्यों रखते हैं? दुकानदार ने कहा कि गुड़ का माहक आएगा तो गुड़ दूँगा आप शक्कर के माहक है आप को शक्कर दूँगा। अब कोई व्यक्ति कहे कि मुझे शक्कर चाहिए, आप गुड़ क्यों रखते हो? यह तो मूर्खता है? इसी प्रकार जब हम सत्संग में चर्चा सुनते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि महाराज ने अनुकूल बात मेरे साधन की नहीं कह कर दूसरे साधन की क्यों कही, ऐसा सोचना

मूढ़ता है। साधक के जीवन में ऐसी मूढ़ता नहीं चाहिए, उसे अपने साधन में दृढ़ रहना चाहिए और यदि अपने साधन की बात हो तो अवश्य स्वीकार करनी चाहिए इससे साधन में कल मिलता है, विप्लव दृढ़ होती है यदि कोई अन्य साधन की बात हो तो सुनने में कुछ नुकसान नहीं होगा। यदि साधन में अनुकूलता-प्रतिकूलता हो तो विरोधाभास नहीं करना चाहिए, ऐसा करने में साधन में रुकावट होती है। विरोध तो करना ही नहीं, विरोध है संसार से और इससे ऊपर उठने के लिए साधन बताया जाता है यदि साधन की तरफ दृष्टि नहीं रखकर संसार की तरफ दृष्टि रखेंगे, यह उचित नहीं है। अगर दृष्टि संसार में एवं शरीर में रहेगी तो साधन नहीं कर सकेंगे। लोग राम-राम करते हैं माता लेकर बैठते हैं, कोई पास से निकल जाए तो कहते हैं मेरे पत्न्या लगा दिया। यह साधन नहीं हुआ। यहाँ तो हम शरीर को लेकर बैठ गए तो मूढ़ता है। जब तक संसार शरीर में दृष्टि है, तब तक साधक साधन की प्राप्ति नहीं कर सकता। अतः जो साधन बताया जाए उस पर दृष्टि रख कर दृढ़ता रखो, चाहे कैसी भी आपत्त आ जाए।

एक दृढ़ निश्चयी ब्राह्मण था। वह एक दिन सड़क पर से निकल रहा था। उसने देखा की एक परिचित व्यक्ति मातलिन से सब्जी खरीद रहा है, ब्राह्मण वहीं रुक गया। ब्राह्मण ने देखा कि यदि कोई एक किलो सब्जी ले चाहे दो किलो चाहे पाँच किलो वह मातलिन एक ही पत्थर से सब्जी तोल कर देती है। ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ उसने

लोगों से यह बात पुरी, लोगों ने कहा कि उस मालिन से खरीदी हुई सब्जी घर से जाकर तोलते हैं तो सब्जी बराबर निकलती है । ब्राह्मण ने उस मालिन से पूछा कि एक ही पत्थर से सब के लिए जो मांगे उतनी सब्जी तोल देती है इसका क्या रहस्य है । मालिन ने उत्तर दिया कि जब मैं मेरे घर से अलग-अलग तोल के बाट लाती थी तो कई बार कुछ बाट गुम हो जाते और इस कारण मेरे भाई मूढ़े पीटते थे । एक दिन दुखी होकर सरोवर किनारे गई । वहीं बैठे-बैठे प्रभु को याद किया कि हमेशा बाट गुम होते हैं और हमेशा मेरी पिटाई होती है । ऐसा जीवन किस काम का । वहीं एक काला पत्थर पैरों में पड़ा था मैंने भगवान को हाथ जोड़ कर उनकी कृपा मान कर वह पत्थर उठा लिया और उसी पत्थर से सब्जी तोलती हूँ जो भगवान की दया से तोल बराबर होता है ।

ब्राह्मण ने विचार किया कि वह पत्थर मैं प्राप्त कर लूँ । कामरुप में पत्थर शालीग्राम जी थे । ब्राह्मण को पहले तो मना कर दिया, फिर कहा कि पत्थर के तीन सौ रुपए लूंगी । यह सुनकर ब्राह्मण सोच में पड़ गया कि इतने रुपए कहाँ से लाऊँ । वह अपने घर गया, ब्राह्मणी ने पिता का कारण पूछा तब ब्राह्मण ने सारी बात बताई । तब ब्राह्मणी ने कहा मेरे गहने पड़े हैं, बेच दो, भगवान की कृपा होगी तो दूसरे बन जाएंगे । ब्राह्मण ने गहने बेच कर तीन सौ रुपए में वह पत्थर खरीद लिया । ब्राह्मण ने उस पत्थर को गंगाजी में स्नान करा कर घर में पूजा

के आले में रखकर उस पर चंदन लगाया, तुलसी दल चढ़ाया। पूजा की रात में भगवान् ब्राह्मण के स्वप्न में आए और कहा, "मुझे वापस पहुँचा दो, नहीं तो ठीक नहीं होगा" ब्राह्मण ने कहा, "वापिस तो नहीं पहुँचाऊँगा" और कहा "माई री मैंने तिओ तराजू तोल, माई री मैंने तिओ मोड़िन्दो मोल। ब्राह्मण अपनी बात पर दृढ़ रहा। रात में भगवान् ने प्रकट होकर ब्राह्मण से कहा अगर तू मुझे वापिस नहीं भेजेगा तो तेरा बेटा मर जाएगा। ब्राह्मण ने कहा बेटा भले ही मर जाए मैं वापिस नहीं भेजूँगा। दूसरे दिन ब्राह्मण का बेटा मर गया। ब्राह्मण ने सोचा कि जन्म-मृत्यु तो संसार का नियम है, लेकिन मैं शालीग्राम जी को वापिस नहीं भेजूँगा।

एक दिन भगवान् ने फिर प्रकट होकर ब्राह्मण से कहा "क्यों दुःख पा रहे हो बेटा मर गया है। मुझे वापिस पहुँचा दो नहीं तो तुम्हारा धन नष्ट हो जाएगा। ब्राह्मण फिर भी अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। ब्राह्मण का सारा धन नष्ट हो गया। फिर भी ब्राह्मण रोज शालीग्राम की पूजा करता। भगवान् ने फिर प्रकट होकर कहा अगर तू मुझे वापिस नहीं पहुँचायेगा तो तेरी पत्नी मर जाएगी। ब्राह्मण की पत्नी मर गई फिर भी ब्राह्मण अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और शालीग्राम जी को नहीं लौटाया। एक दिन भगवान् ने ब्राह्मण से कहा अगर तूने शालीग्राम नहीं लौटाया तो तुझ पर बिजली गिरेगी। अगले दिन ब्राह्मण ने शालीग्राम जी को अपने सिर पर रख लिया। शालीग्राम जी के कारण बिजली आती लेकिन ब्राह्मण पर नहीं गिरती ब्राह्मण के पास आकर वापिस

चली जाती। ब्राह्मण नदी छट पर गया और शालिग्राम जी की पूजा करने लगा वहीं दो लड़के आए, एक श्याम सलोना था और एक गौर वर्ण था। दोनों लड़के नदी में इस प्रकार कूदे की ब्राह्मण और शालिग्राम जी भीग गए। इस पर ब्राह्मण ने कहा ऐसा कैसे रहा रहे हो मैं और मेरे शालिग्राम जी भीग गए। दोनों लड़कों ने कहा आप नाराज मत होना। ब्राह्मण ने कहा कि मैं नाराज नहीं हूँ, परन्तु सही ढंग से नहाओ ताकि छोटें नहीं लगे। ब्राह्मण ने उन सुन्दर लड़कों से पूछा "तुम कहाँ रहते हो?" दोनों सुन्दर लड़कों ने कहा "हम इस गाँव में रहते हैं।" दोनों लड़के प्रसन्न हुए। श्याम सलोने ने ब्राह्मण को बंसी दी और कहा जब भी आपकी इच्छा हो यह बंसी बजाना मैं आप को मिल जाऊँगा। गौर वर्ण लड़के ने ब्राह्मण को एक अत्यंत सुन्दर एवं सुवासित कमल दिया। ब्राह्मण ने विचार किया "यह कमल मैं कहाँ रखूँगा?" उसने वह कमल राजा को दे दिया। राजा को वह कमल बहुत अच्छा लगा। राजा वह कमल पास में बैठी रानी को दे दिया। इस पर दूसरी रानी नाराज हो गई। मुझे ऐसा कमल नहीं दिया। इस बात पर छटपट हो गई। राजा ने दूसरे कमल के लिए ब्राह्मण की खोज करवाई। ब्राह्मण तो शालिग्राम जी को अपने सिर पर रखकर भजन कर रहा था। राजा के आदमी ने ब्राह्मण से कहा आपको राजा बुला रहे हैं। ब्राह्मण राजा के पास गया। राजा ने कहा "आप एक और कमल लाकर दो।" ब्राह्मण ने कहा "मेरे पास तो एक ही कमल था।" दूसरा कहाँ से लाऊँ। राजा ने कहा "आपको साना ही पड़ेगा।" ब्राह्मण ने कहा ठीक है।

कुछ करूँगा"। ब्राह्मण ने सोचा कि कमल तो मुझे गौर वर्ण लड़के ने दिया। अब वो लड़का कहाँ मिलेगा। ब्राह्मण को याद आया कि श्याम सलोने ने बंसी दी जिसे बजाने से वह प्रकट होगा। ब्राह्मण ने जैसे ही बंसी बजाई श्याम सलोना और गौर वर्ण दोनों ही प्रकट हो गये। लड़कों ने ब्राह्मण से कहा आपको क्या चाहिए? ब्राह्मण ने कहा "मुझे वैसे कमल चाहिए। लड़के ने दे दिया। ब्राह्मण कमल लेकर वहीं से निकल गया। ब्राह्मण ने सोचा कि आज राजा ने कमल मांगा है कल कुछ और मांगेगा इसलिए ब्राह्मण ने जंगल में जाकर बंसी बजाई और दोनों श्याम सलोना एवं गौर वर्ण के दर्शन प्राप्त कर सदा के लिए कृतकृत्य हो गया। भगवान् ने खुद प्रकट होकर कहा कि तुम्हारे दूढ़ निश्चय के आगे तुम्हारे सामने मुझे हाजिर होना पड़ा। ब्राह्मण भगवान् की छवि को देखकर अचेत हो गया। जब ब्राह्मण की मूर्छा दूटी तो स्वयं को भगवान् के धाम में पाया। भगवान् ने कहा यह तुम्हारा बेटा, तुम्हारी स्त्री और तुम्हारा धन यहाँ पर इस धाम में आ गए हैं यह सब तुम्हारे दूढ़ निश्चय के कारण यहाँ आए हैं। अब तुम इस धाम का अनुपम सुख प्राप्त करो।

अतः दूढ़ निश्चयता जीवन में ऐसी होनी चाहिए कि चाहे कैसी भी प्रतिकूलता हो जाए संसार चाहे कुछ भी कह दे लेकिन अपनी दृढ़ता को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। लेकिन हमारे से ऐसी भूल हो जाती है की जीवन में दृढ़ता नहीं रहती। जब तक दृढ़ता नहीं है तब तक साधन नहीं बनेगा। जब साधन नहीं बनेगा तो साध्य की प्राप्ति नहीं होगी।

तो पहली बात यही बताई गई है कि साधन के ऊपर दृढ़ रहो । चाहे सगुण भक्ति है चाहे निरगुण भक्ति जो साधन अपनाया है । उस पर दृढ़ रहो जब दृढ़ता होगी तभी सत्य की अनुभूति होगी अतः जीवन में ऐसी आवश्यकता है कि साधन के प्रति असमंजस नहीं होना चाहिए । साधक के मन में ऐसी बात नहीं आनी चाहिए की साधन करने से भगवान् की प्राप्ति होगी की नहीं, कल्याण होगा की नहीं, उद्धार होगा कि नहीं अगर साधक के मन में इस प्रकार की हलचल हो तो यह सम्झो की साधन ठीक तरह से पकड़ा नहीं गया है ।

इसलिए बिना देरी किये जो साधन सुगम सने अपना लो और दृढ़ रहो क्योंकि जब संसार छोड़ कर जाना पड़े यह पता नहीं । अनेकों साधन बताए गए हैं ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग । जब भगवान् ने तीनों योग का वर्णन करने के बाद भक्ति योग की महत्ता बताई । तब उद्धवजी को संशय हुआ । उन्होंने भगवान् से पूछा कि आपने अलग-अलग योगों का वर्णन करने के बाद भक्ति योग को महत्त्व दिया । मैं कीयसा साधन अपनाऊँ । भगवान् ने कहा कि साधन दिखाने में अलग अलग है । जिस साधन की रुचि हो वैसा साधन अपना लो । लेकिन तीनों के द्वारा मेरी प्राप्ति होती है । जैसा साधक होता है वैसा ही साधन बताया जाता है, साधन को लेकर किसी प्रकार का विवाद नहीं होना चाहिए ।

भगवत्प्राप्ति

कई लोग पूछते हैं कि "पहले तो कर्म करने का उपदेश दिया और फिर भगवान् कहते हैं कि कर्म त्यागो, कर्म की आवश्यकता है ही नहीं"। हम लोग क्रिया के द्वारा कुछ करना चाहते हैं। पर वास्तव में वहीं कुछ करना है ही नहीं ऐसा कहने पर ये संशय जागृत हो जाता है कुछ करना ही नहीं है तो फिर करने की क्या आवश्यकता देखो शरीर को लेकर शरीर की क्रिया करो, संसार को लेकर संसार की क्रिया करो। जो भी करना है शरीर एवं संसार को लेकर संसार में ही करना है। लेकिन परमात्मा के लिए तो कुछ करना ही नहीं है। जो कुछ भी प्राप्त किया है वह रहने वाला नहीं है। संसार में जो कुछ भी किया वह पहले था नहीं, बाद में रहेगा नहीं और बीच में भी इसका कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि जो कुछ मिला है वह रहने वाला नहीं है। हमारे मन में यह धारणा है कि जैसे संसार की क्रिया करेंगे वैसे ही परमात्मा की प्राप्ति होगी यह जो प्राप्ति हम चाहते हैं संसार की तरह चाहते हैं। जैसे हम संसार की सुख-सुविधा चाहते हैं। वैसे ही परमात्मा की प्राप्ति चाहते हैं। यही भूल हम से होती है। इस भूल को मिटाने के लिए संत महात्माओं ने यह बात कही है कि जो कुछ कर रहे हैं वह नहीं करने के समान है। कहना ही है कि जब पीछे मुड़ के देखा तो रहा टोर का टोर। आए थे तब खाली हाथ आए थे और जाएंगे तब खाली हाथ

जाएंगे तो रहे तो हम खाली के खाली । शरीर और संसार को लेकर
 संसार का कर्म करने की कोई मनाहि नहीं है क्योंकि भगवान ने स्वयं
 आज्ञा दी है "कर्मण्येवाधिकारस्ते" कर्म करने का आदेश दिया है
 लेकिन यह कर्म संसार बंधन से निवृत्त होने के लिए है न कि संसार में
 बंधने के लिए । जब संसार बंधन निवृत्त हो जाते हैं तो कर्म अपने आप
 छूट जाते हैं । जैसे छत पर जाने के लिए सीढ़ी चढ़नी पड़ती है और
 जब हम छत पर पहुँचते हैं तब सीढ़ी अपने आप छूट जाती है, छोड़नी
 नहीं पड़ती । त्यों ही कर्म की अनुभूति हो जाने पर कर्म करने की
 आवश्यकता नहीं रहती कर्म निवृत्ति स्वतः हो जाती है । जब तक कर्म
 निवृत्ति नहीं होती तब तक कर्म करते रहना चाहिए । कर्म के विषय में
 लोगों को शंका है कि कर्म किसलिए हैं उत्तर यह है कि कर्म बंधन
 निवृत्ति के लिए हैं न कि संसार में बंधने के लिए । जब बालक बिमार
 हो जाता है तब माँ लड्डू का लालच देकर बालक को कड़वी दवाई
 देकर रोग मुक्त करती है । त्यों ही प्रत्येक बच्चा यह है कि ऐसा कर्म
 करने से स्वर्ग की प्राप्ति होगी । निष्काम कर्म करता है तब भगवान
 कर्म की प्राप्ति कर लेता है । अतः कर्म बंधन के लिए नहीं बंधन
 निवृत्ति के लिए हैं । हम परमात्मा को क्रिया के द्वारा प्राप्त करना चाहते
 हैं संसार में परमात्मा क्रियाशील है । साधक को जो साधन रुचिकर
 लगे, श्रेष्ठ लगे अपनाना चाहिए और दृढ़ रहना चाहिए । यदि साधक में
 दृढ़ता है तो उसका साधन सफल हो जाएगा और वह परमात्मा को

प्राप्त कर लेगा। जैसे ब्राह्मण अपने निश्चय पर दृढ़ रहा और ब्रम्ह को प्राप्त किया। प्रह्लाद को उसके पिता ने ब्रम्ह नाम छोड़ने के लिए कहा, उसे कई प्रकार के कष्ट दिए लेकिन प्रह्लाद ने ब्रम्ह भक्ति नहीं छोड़ी और परमात्मा को प्राप्त किया। साधक के जीवन में भी साधन के प्रति ऐसी दृढ़ निष्ठा रहनी चाहिए। आज लोगों की ऐसी दृढ़ निष्ठा नहीं है "गंगा गए गंगादास जमुना गए जमुनादास" जैसी कहावत चरित्रार्थ हो रही है। इन महाराज ने ये कहा इनकी बात मान ली, उन महाराज ने ये कहा उनकी बात मान ली दृढ़ता नहीं होने के कारण भटकते रहते हैं और भटकते-भटकते एक दिन मृत्यु हो जाएगी। भटकने से तो काम नहीं बनेगा। यह नहीं कहा जाता कि आप किसी और की बात मत सुनो पर अपने साधन पर दृढ़ रहो।

लोग ऐसा प्रश्न करते हैं कि "क्या अमुक महात्मा की बात सुननी चाहिए या नहीं? इस पर संत महात्मा कहते हैं कि महात्माओं की बात अवश्य सुननी चाहिए परन्तु ऐसा समझो कि जो बात वे बता रहे हैं वह मेरे साधन की बात है। अपने साधन में बल प्राप्त करने के लिए ऐसा ही भाव होना चाहिए। लोगों से भूल हो जाती है और भटकते फिरते हैं ऐसा करते-करते उग्र पूरी हो जाती है। समय व्यर्थ चला जाता है, फिर केवल पश्चात्ताप रहता है। जो सत्य निकल गया उसकी चिन्ता छोड़ दो अब आज से ही सीतारामजी के चरणों में दृढ़ निश्चय पर लो कि जिस साधन को पकड़ लिया उस पर दृढ़ रहूंगा।

प्रतिकूलता ही आजाए तो धबराता मत, दुःख आ जाए तो धबराता मत
 पूरा परिवार एवं संसार प्रतिकूल हो जाए तो भी मत धबराता लेकिन
 सौभाग्य जो से कभी विमुख मत होना, अपने साधन से कभी भटकना
 मत । संसार आज प्रतिकूल हो लेकिन कल संसार अनुकूल होगा ।
 अनुकूलता चाहते हैं तो प्रतिकूलता मिलती है, सुख चाहते हैं तो दुःख
 मिलता है साधन के ऊपर दृढ़ रहोगे तो सब कुछ अनुकूल हो जाएगा ।
 महात्मा के लिए बताया जाता है "चारों खूंट जागिरी में, सदा दिवाली
 संत के आठों प्रहर आनंद" यह दृढ़ता की बात है । जो अपने साधन पर
 दृढ़ है उसके लिए सदा दिवाली है । पर हम लोग तो अपने साधन को
 भूल जाते हैं और संसार की परवाह करते हैं । ये लोग वैसे कहते हैं
 वैसे करेंगे ये लोग ऐसा कहते हैं ऐसा करेंगे क्या-क्या करेंगे हम ?
 इसके लिए एक उदाहरण है जब घर में कोई बीमार हो जाता है ।
 मिलने के लिए बहुत लोग आते हैं । जो भी आता है वैध बनकर आता
 है कोई कहता है रोगी को अमुक दवाई दीजिए कोई कहता है रोगी को
 अमुक घास दीजिए इस प्रकार हर कोई अपनी-अपनी सलाह देता है ।
 कोई ऐसा नहीं कहता कि जो दवाई डॉक्टर ने बताई है वही दवाई
 देना । लेकिन हम सब का कल करते नहीं और जो उपचार हमारे
 डॉक्टर ने बताया हो वही पालू रखते हैं । क्योंकि हम जानते हैं कि
 अलग-अलग तरह की दवाई नुकसान करेगी । त्यों ही संसार में अलग
 अलग साधन बताने वाले लोग हैं और सब अपने-अपने साधन

बनाएंगे लेकिन हमें अपने साधन से विचलित नहीं होना है पकड़ा रहना है तभी कार्य सिद्धि होगी और साधन की प्राप्ति होगी। संसार चाहे किसी भी साधन को अपनाए लेकिन मैं तो अपने साधन पर दृढ़ रहूँगा, मेरे राम जी इसके द्वारा ही मिलेंगे।

बहुत भटक लिया, बहुत समय गंवा दिया अब एक साधन पकड़कर उस पर दृढ़ रहो ईश्वर की कृपा से साध्य की प्राप्ति अवश्य होगी।

भगवान ने कृपा करके हमें संसार में भेजा है लेकिन हम लोग संसार में आकर, संसार को देखकर भगवान को भूल गए। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध में सब कोई उलझे हुए हैं। कोई खाने-पीने में भटके हुए हैं तो कोई संसार के ऐश आराम में उलझे हुए हैं। जो हमारा वास्तविक उद्देश्य था, जिस लक्ष्य के लिए हम संसार में आए हैं उसे तो हम भूल गए और जब तक जीवन में अपने वास्तविक लक्ष्य की तरफ दृष्टि नहीं होगी, तब तक कल्याण की प्राप्ति नहीं होगी ऐसा शास्त्रों में लिखा है और संत महात्माओं ने भी कहा है।

संसार, जो दिखाता है, जिसकी सत्ता पहले नहीं थी, बाद में नहीं होगी और बीच में भी कोई अस्तित्व नहीं है। इस संसार में जीव माया मोह पदार्थों में उलझा हुआ है अपने लिए खुद विचार नहीं करता। कम से कम अपने लिए तो सोचे कि मैं किसके लिए आया हूँ और मैं क्या कर रहा हूँ। यह एक विहम्बना की बात है, कैसी दुःख की बात है कि

जीव संसार में आया है परमात्मा की प्राप्ति के लिए लेकिन परमात्मा की प्राप्ति का लक्ष्य भूल गया और नरक की तैयारी कर लेता है, अनंत दुःखों की तरफ जीव चला जाता है।

भगवान ने सबको यह छूट दी है कि अगर संसार में इस मृत्यु लोक में अपना ठठ्ठार कर लो। भगवान कहते हैं- "जो इस मृत्युलोक में रहकर खजभगुर शरीर के द्वारा मेरी प्राप्ति कर लेगा उसे मैं अपनी मोद दे दूंगा। मैं उस भक्त को अपना स्वरूप दे दूंगा।" फिर भी लोग इस बात की तरफ ध्यान नहीं देते।

एक राजा ने अपने नगर में ऐलान किया कि- "कल के दिन मैं अनुक बगीचे में रहूंगा। वहाँ जो मुझे सबसे पहले मिलेगा, उसे मैं अपना सम्पूर्ण राज्य दे दूंगा।"

ऐलान को सुनकर सभी लोगों को पास जाने की राजा के पास उत्कण्ठा हुई, उन्होंने सोचा शायद राज्य उन्हें मिल जाए। राजा जिस महल में बैठा था उसके चारों तरफ परकोटा था, एक ही दरवाजा था और उस परकोटे के बीच में महल से लेकर परकोटे के दरवाजे तक बगीचा था। राजा ने उस बगीचे में कई प्रकार की दुकानें लगवाई छाने-पीने की दुकान, खाने की दुकान आदि। संसार के सारे सुख की व्यवस्था उन दुकानों में करवाई।

लोगों ने शाम से ही भीड़ शुरू कर दी की कल दरवाजा खुलते ही भीड़ जाकर राजा से सबसे पहले मिलना है सुबह जल्दी दरवाजा

खुल गया। लोगों की भीड़ उस दरवाजे में चली भीड़ इतनी थी कि धक्का-मुक्की होने लग गई। हर कोई पहले जाने की कोशिश में था। जैसे ही लोग आगे बढ़े सुन्दर दुकानों को देखकर उनका मन आकर्षित हो गया। उन दुकानों पर लिखा हुआ था सारी चीजें मुफ्त में उपलब्ध है। कई लोग ऐसे थे जो खाने-पीने के शौकीन थे और यह विचार कर रहे थे कि इतनी भीड़ है, धक्का-मुक्की हो रही है पता नहीं कौन पहले जाकर राजा से मिलेगा, किसको राज्य पद मिलेगा। उन्होंने सोचा, आज खाने-पीने की चीजें मुफ्त में मिल रही हैं, क्यों न खूब आराम से तरह-तरह के पकवान खा लें, वे सभी जाकर खाने पीने लग गए। जो लोग नमकीन के शौकीन थे वे नमकीन खाने लगे। जो लोग मीठे के शौकीन थे वे तरह-तरह की मिठाईयाँ खाने लगे।

कई लोग ऐसे होते हैं जो खाने-पीने में बहुत आनंदित रहते हैं। पर में मनपसंद चीज नहीं बनती तो कई लोगों की आदत होती है कि वे खुद बनाकर खाते हैं। देखो, यदि जीभ को बुरा में नहीं कर सकते तो पाद रखना फिर डॉक्टर के पास जाना पड़ेगा। अभी जीभ को बुरा में नहीं रखोगे तो गलत आदत पड़ जाएगी। और मर्जी आए जैसा खाना-पीना करोगे। बाद में दुःख होगा डॉक्टर के पास जाना पड़ेगा। बल्ल बेशर कभी अधिक होगा तो कभी कम इसलिए खाने-पीने में सावधानी रखनी चाहिए परन्तु लोग इस बात पर सावधान नहीं हैं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आहार शुद्धि रखना आवश्यक है। भोजन करते

समय जितनी भूख हो उससे कम भोजन करने से पेट ठीक रहता है ।
एक कहावत है-

पैर गरम पेट नरम सिर ठण्डा ।

फिर वैद्य आए तो मारो डण्डा ॥

वैद्य क्यों आता है, बीमार क्यों होते हैं ? क्योंकि खाने पीने का ध्यान नहीं रखते । वहीं गए यह चीज खा ली, वहीं गए वह चीज खा ली । जो मिला खाते गए फिर बीमार हो जाते हैं । अगर वात, पित्त और कफ तीनों ठीक रहते हैं तो शरीर ठीक चलता है । यदि तीनों में से कोई एक गड़बड़ हो जाए तो आदमी बीमार हो जाता है और डॉक्टर के पास जाना पड़ता है ।

कुछ लोग खाने-पीने के ज्यादा शौकीन नहीं होते जो परेस जाए खा लेते हैं । लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो परेसे हुए भोजन में नुक्स निकालते हैं कभी कहते हैं थोड़ा कम है, तो कभी कहते हैं थोड़ा ज्यादा है, ऐसा कभी नहीं कहना चाहिए । सद्पुरुषों की खानी के अनुसार भोजन करते समय कभी भी भोजन में नुक्स नहीं निकालना चाहिए । क्योंकि भोजन भगवान को अर्पण हो जाने पर महाप्रसाद हो जाता है उसमें कभी कोई नुक्स नहीं निकालना चाहिए । इसलिए यह नियम बनाया गया है कि खाना खाते समय मौन रहना चाहिए क्योंकि मौन रहने पर व्यक्ति न तो बोलेगा और न ही भोजन में दोष देखेगा । ठीक है, अगर भोजन में कोई कमी रह जाए तो भोजन करने के पश्चात्

प्रेम से कह दो कि भोजन में अमुक कमी है आगे से ध्यान रखना । अगर कौन नहीं भी नहीं रखेंगे तो कोई बात नहीं लेकिन भोजन करते समय नुक्सान मत निकालो ।

जो लोग देखने के शौकीन थे उन्होंने विचार किया कि दुकानों में कितना सुंदर नाच-गान हो रहा है, राजा तो पता नहीं कौन बनेगा इसलिए सुन्दर-सुन्दर नाच-गान देखते हैं । ये लोग नाच-गान देखने बैठ गए और इस बात को भूल गए की वे किस काम के लिए वहाँ आए थे । जो लोग सुनने के शौकीन थे वे मधुर संगीत सुनने में तल्लीन हो गए ।

जो लोग शृंगार में शौक रखते थे वे शृंगार में आकृष्ट हो गए । और आराम से शृंगार करने लगे । कई लोग हमेशा खूब बन ठन कर रहते हैं कुछ लोग बालों को अलग तरह से कटवाते हैं जैसे आगे से छोटे-बाल पीछे से गाव बकरी की पूंछ की तरह लम्बे बाल । धीरे-धीरे सभी लोग अपनी-अपनी रुचि के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध आदि चीजों की दुकानों में फंस गए । कोई एक विरला व्यक्ति ही था जिसने विचार किया की राजा के मिले तो मिले अपने तो चलते रहो । वह व्यक्ति ही राजा के पास सबसे पहले पहुँचा और राजा ने उसे राजाद दे दिया । यह एक दृष्टान्त है । संत महापुरुषों द्राष्टान्त पढ़ायो ।

भगवान ने ऐसा ऐलान किया है कि "जो मेरी प्रार्थि करना चाहता है वह साधना करे और मेरी प्रार्थि करते ही उसे अपना स्वरूप

दे दूँ। हम सभी लोग इस संसार में आए हैं भगवान् के स्वरूप की प्राप्ति हो। लेकिन संसार में आकर सब के सब जगह-जगह उलझ गए। कोई घर में उलझा हुआ है तो कोई परिवार में उलझा है कभी कहीं जाना पड़ता है तो कभी कहीं। कोई दुकान में उलझ गए तो कोई खाने-पीने में, कभी किसी पार्टी में जाना है तो कभी क्लब में जाना है। संसार में हर कोई उलझा हुआ है कोई कहीं तो कोई कहीं। कुछ लोगों की आदत होती है कि शाम होते ही सिनेमा देखने जाते हैं। एक भाई संतजी से मिला और कहने लगा जोधपुर में शायद ही कोई ऐसी फिल्म होगी जो मैंने नहीं देखी होगी। इस पर संतजी ने कहा कि 'बड़ा अच्छा किया' और पूछा कि गांधी मैदान में संत महात्मा आते हैं तो कभी वहाँ आया। भाई ने उत्तर दिया-नहीं। ऐसे लोग भी होते हैं जो संत महात्मा आते हैं वहाँ तो शायद ही जाते हैं लेकिन फिल्म लग्नी हो तो जरूर जाते हैं।

सब कोई शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध से आकृष्ट होकर अपना स्वरूप भूल बैठे हैं। आए हैं भगवान् की भक्ति के लिए लेकिन संसार में जगह-जगह माया मोह आदि पदार्थों में आशक्त हो गए। कोई विरता ही भगवान् का प्यारा विचार करता है कि भगवान् की प्राप्ति हो अपने तो बस भजन करते रहना है। जब भजन करेंगे तब भगवान् से मिलेंगे ही अतः "भगवान् तद्धाम परमं मया" भगवान् अपना दिव्य पद

उसे दे देते हैं और इस प्रकार भगवत् स्वरूप की प्राप्ति हो जाती है । भगवान की प्राप्ति करने वाले बिरले ही होते हैं । सब कोई संसार में जगह-जगह आसक्त होकर अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं, अपने लक्ष्य को भूलकर संसार में दुःख पाते हैं, मोते खाते हैं फिर भी चेकते नहीं । किन्तु विद्वान् की बात है, किन्तु दुःख की बात है कि संसार में आए भगवान की भक्ति के लिए लेकिन भगवान की भक्ति तो भूल गए और क्यों के रास्ते को अपनाया । क्यों अज्ञानता में दुःख पाते हो, चेक करो मानव शरीर बार-बार नहीं मिलने वाला नहीं । भगवान ने कृपा करके कल्याण का एक रास्ता बताया है, उद्धार का एक मौका दिया है और अब भी उद्धार नहीं किया, कल्याण का रास्ता नहीं पकड़ा तो किन्तु दुःख पाना पड़ेगा । पूर्ण निष्ठा के साथ, पूर्ण श्रद्धा के साथ भगवान की भक्ति में लगे रहो । भगवान के चरणों में श्रद्धा एवं निष्ठा रखोगे तो भगवान जरूर कृपा करेंगे और कल्याण का मार्ग दिखाएंगे । संसार के पदार्थों में आसक्त होना कोई बुद्धिमान नहीं है, समझदारी नहीं है । अतः भगवान की भक्ति एवं भजन में लग जाओ । कैसा भी जीवन क्यों न हो, जो भगवान की भक्ति करते हैं, भगवान का नाम लेते हैं तो उनका कल्याण किसी न किसी उपाय से हो ही जाता है । यदि उद्धार करने का साधन नहीं मिले तो भगवान खुद साधन उपलब्ध कर देते हैं । ज्ञान देने वाला नहीं है तो भगवान खुद कृपा कर ज्ञान देने वाला